1/6/1965 मंगलवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– ये वक्त जा रहा है.....

ओमशांति। बच्चों ने गीत सुना कि बहुत गई, अब थोड़ी रही। श्रीमत जो कहती है, क्या कहती है? मुझे निरंतर याद करने का पुरुषार्थ करो। ऐसे कहती है ना। किसने कहा? शिवबाबा ने कहा। बच्चों को समझाया गया है कि मनुष्य की आत्माएँ जब शरीर लेती हैं तो उनका शरीर का नाम पड़ता है। पीछे क्या होता है? शरीर छोड़ा, दूसरा शरीर लिया तो दूसरे शरीर का नाम पड़ा, फिर तीसरा शरीर लिया तो तीसरे का नाम पड़ा। ऐसे भिन्न–2 नाम हर एक जन्म में मिलते हैं। आत्मा का नाम नहीं बदलता है, मेरे शरीर का नाम बदलता है। ये तो बच्चों को समझाया गया है। परमपिता परमात्मा शिव घड़ी–2 शरीर नहीं बदलते हैं ना। वो तो एक ही बार आते हैं, जिसको ही पतित–पावन कहा जाता है। ज़रूर पतित–पावन का कोई नाम तो होगा ना कि ऐसे ही सिर्फ पतित–पावन! तो देखो, क्या कह देते हैं– पतित–पावन, फिर कहते हैं सीता–राम। अभी सीता–राम का भी अर्थ समझना चाहिए– सीताओं का राम। सीताएँ कहा जाता है भक्ति को। उनका साजन है भगवान, जिसको फिर राम कह देते हैं। तुम बच्चे अच्छी तरह से जानते हो कि इन सब भक्तों का....। इसमें बच्चियाँ भी आ जाती हैं, बच्चा भी आ जाता है ; छोटे भी आ जाते हैं, बुड्ढे भी आ जाते हैं। सभी भगत किसको याद करते हैं? भगवान को। अगर सभी भगत भगवान हैं तो फिर याद किसको करेंगे? इसलिए सभी भगत एक भगवान को याद करते हैं। फिर बंदगी कहो, साधना कहो, प्रार्थना कहो, करेंगे तो एक को ना; क्योंकि सबका बाप तो एक है। सबका सद्गति दाता एक है। बच्चों को समझाया गया है कि अंग्रेजी में भी कहते हैं– सबका लिबरेटर एक है, सबका गाइड भी एक है। अंग्रेजी में भी उसको कहा जाता है ना लिबरेटर और गाइड। बरोबर सभी पतितों को पावन करने वाला भी एक है, पावन करके पीछे गाइड बन करके आत्माओं को ले जाने वाला भी एक है, सभी सजनियों का साजन भी एक है। बाबा ने समझाया है ना कि भक्तों को, चाहे मेल हों, चाहे फिमेल हों, भक्त ही कह देते हैं। सभी भगवान को याद करते हैं। ये भी कहते हैं– गॉड फादर, परमपिता परमात्मा; परन्तु उनको पहचानते नहीं हैं कि वो कैसे हैं, हम पतितों को पावन करने कब आते हैं। सो तो ज़रूर जब सारी दुनिया पतित, जड़जड़ीभूत, तमोप्रधान अवस्था में होगी तभी तो बाप आएँगे ना और बाप आ करके ही कहते हैं। जब यह मनुष्य–सृष्टि का सारा झाड़ जड़जड़ीभूत हो जाता है, तमोप्रधान हो जाता है, भ्रष्टाचारी हो जाता है, सभी पाप आत्माएँ बन जाते हैं...। सभी के लिए कहते हैं ना ; क्योंकि सबका सद्गति...। सब माना सभी बच्चों का; क्योंकि वो तो समझा दिया है कि रावण ने आ करके हमारे बच्चों को जला दिया है। सुना है ? एक कथा में लिखा हुआ है कि सागर के सभी बच्चे भस्मीभूत हो गए थे, पीछे उनके ऊपर आ करके वर्षा की तो जाग उठे। तो ये है ना बरोबर कि इस समय में सभी भस्मीभूत हैं। किसने भस्मीभूत किया है? काम शत्रु ने। सबको जला दिया है ; क्योंकि काम से ही पैदा होते हैं। यह शरीर सबको विख से ही मिलता है। यह तो बाप बैठ करके बच्चों को समझाते हैं। बेसमझ बच्चे हैं तब तो बाप आते हैं और वो कहते भी हैं कि तुम कितने बेसमझ बन गए हो! मुझ अपने बाप को, जो तुमको जीवनमुक्ति देने वाला है, उनको तुम सर्वव्यापी कह देते हो। इतनी गालियाँ देते हो– कुत्ते में है, बिल्ले में है, मच्छ अवतार, कच्छ अवतार, वाराह अवतार, हनुमान अवतार, फलाना अवतार। एक तरफ तो कहते हो कि नाम–रूप से न्यारा, जन्म–मरण से रहित, फिर पतित–पावन भी उन्हीं को कहते हो और फिर उन्हीं को ही कह देते हो कि सर्वव्यापी, मच्छ में, कच्छ में, फलाने में। आत्माएँ तो जनावरों में भी अपनी हैं, मनुष्यों में भी अपनी हैं। ऐसे थोड़े ही कहेंगे कि ये सभी रूप उसने धरे हैं। यह तो कभी हो ही नहीं सकता है। रूप धरे हैं तो सभी भगवान हो जाते हैं और ये भगवान दुर्गति को थोड़े ही पाते हैं! नहीं,

आत्मा ही दुर्गति को पाती है। आत्मा ही पतित बनती है, आत्मा ही पावन बनती है। आत्मा जब पावन बनती है तो उनको चोला भी पावन मिलता है। देखो, अभी जब यह सब शरीर (और) ये सारी मनुष्य–सृष्टि ख़त्म हो जाएगी तो फिर जो आएँगे उनकी सतोप्रधान बुद्धि होगी। पीछे रजो में आएँगे, फिर तमो में आएँगे। सब ऐसे ही तो होता है ना। हर एक बात ऐसे होती है। मकान है, नया बना है। इनको सतोप्रधान कहेंगे, फिर इनकी एज़ेज होती है। जब आधा होगा तो पीछे उनके बाद कहेंगे पुराना मकान। ऐसे तो सब चीज होती है ना। शरीर है, पहले बालक होता है (तो) कितना प्यारा लगता है। उनको फिर कहते हैं सतोप्रधान अवस्था ; क्योंकि समझाया गया है कि साधु–महात्मा लोग और जो छोटे बच्चे होते हैं, समान हैं; क्योंकि वो भी पाँच विकार में नहीं जाते हैं (और) बच्चों को भी तो पता भी नहीं है। इसलिए बालक की भेंट करते हैं। बालक जब बिल्कुल छोटा है जब(तो) सतोप्रधान है, पीछे सतो बनता है, पीछे रजो बनता है, पिछाड़ी में आ करके तमो बन जाते हैं। तो हरेक वस्तु ऐसे ज़रूर बनती है। यह भी जो सारी दुनिया है, इसको कहा ही जाता है– न्यू वर्ल्ड फिर ओल्ड वर्ल्ड। ऐसे तो कहेंगे ना। सतयुग को कहेंगे न्यू वर्ल्ड यानी नई दुनिया, फिर कलहयुग को कहेंगे पुरानी दुनिया। अच्छा, अभी यह तो भारतवासी अच्छी तरह से जानते हैं, बल्कि और भी नेशन वाले जानते हैं कि जब भारत नया था तब बरोबर ये आदि सनातन देवी–देवता धर्म, जिसको ही स्वर्ग, बहिश्त, हैविन, पैराडाइज़.....। ये सभी नाम भारत के ऊपर रखे हुए हैं। अब यह भारत वो तो नहीं है। अभी इसको कोई स्वर्ग, पैराडाइज़ कहेंगे? यहाँ दुःख ही दुःख है। तो यह समझ में आता है कि जब भारत पैराडाइज़ है तब एक ही धर्म है। अच्छा, और सभी आत्माएँ कहाँ हैं? वो मुक्तिधाम में हैं वा निर्वाणधाम में हैं या वानप्रस्थ में हैं, जहाँ वाणी का गम नहीं; क्योंकि उसको कहा ही जाता है साइलेंस वर्ल्ड, शांत। आत्माएँ शांत रहती हैं, अपने स्वधर्म में रहती हैं। उसको कहा जाता है आत्माएं स्वधर्म में रहती हैं ; क्योंकि आत्मा का स्वधर्म है ही शांत। आत्मा को जब अपने स्वधर्म का पता पड़े तो शांति के लिए कहाँ धक्का नहीं खावे। वो समझ जावे कि हमारा स्वधर्म शांत है और हमको इन ऑरगन्स से कहना है, बात करना है, खाना है, पीना है। अगर हमको शांत में रहना है तो हम अपने को अलग कर देते हैं। ओऽम् शांति, ऐसे कहते हैं ना। ओम् माना आई एम आत्मा, मेरा स्वधर्म है शांत। तो शांत में बैठ सकते हैं; परन्तु कर्म बिगर तो कोई रह नहीं सकते हैं। इसलिए आत्मा कब तक शांत रहेगी? ज़रूर यहाँ कर्म करने के लिए आए हैं। यह कोई मूलवतन तो नहीं है ना। शांतिधाम तो नहीं है जहाँ शरीर होते शांत में रहेंगे। यह तो हो नहीं सकता है। शांतिधाम कहा ही जाता है जहाँ आत्माएँ निवास करती हैं निर्वाणधाम में। अभी बाप आए हैं। बोलते हैं कि अपने स्वधर्म में टिको यानी अपन को अशरीरी समझो। देह–अभिमान के बदली में देही–अभिमानी भव। बाप ऐसे कहेंगे ना– हे बच्चों माना हे आत्माओं! अपन को आत्मा निश्चय कर, अब मुझ अपने बाप को याद करो। तो उसका नतीजा क्या होगा? इस योगाग्नि से.....। देखो, भारत का प्राचीन योग बड़ा नामी–ग्रामी है ; परन्तु था। जब फिर वो बाप आवे तब आकर सिखलावे ना। मनुष्य तो मनुष्य को नहीं सिखला सकेंगे। मनुष्य, मनुष्य को कभी भी सद्गति नहीं दे सकते हैं, जबकि ये है ही पाप आत्माओं की दुनिया, भ्रष्टाचारियों की दुनिया, विषियस दुनिया। इनको कहा ही जाता है वैश्यालय। भेंट में है ना। हाँ बरोबर, सतयुग है शिवालय। बच्चों को अच्छी तरह से समझाया जाना है ना। तो बाप आ करके अभी इस समय में बच्चों को धीरज देते हैं। बोलते हैं– बच्चे, अभी तुम्हारे सुख के दिन तो आए हैं ना। अभी जितना हो सके इतना तुम अपने बाप को याद करो; क्योंकि अंत मते सो गत। यह गाया जाता है ना अंत काल जो–2 सिमरे, ऐसे चिंतन में जो मरे, वल–2 जून अवतरे। फिर भी पुनर्जन्म मिलेगा। अभी बोलता है कि यह मृत्युलोक है, इसमें तुमको पुनर्जन्म नहीं मिलने का है; क्योंकि अमरलोक सतयुग को कहा जाता है, इसको

मृत्युलोक कहा जाता है। अमरलोक में तुम अमर रहते हो। वहाँ तुमको अकाले मृत्यु नहीं खाती है। बाप ने समझाया है ना कि वहाँ जैसे सर्प अपनी पुरानी खल को छोड़ नई ले लेते हैं। मिसाल तो देते हैं ना। देखो, उसमें भी तो अक्ल है ना। कितना अच्छा अक्ल है! जब नई खल मिल जाती है तो पुरानी छोड़ देते हैं। यह मिसाल किसके लिए है? यह सतयुग में देवी–देवताओं के लिए है; क्योंकि जब उनका शरीर बुड्ढा होता है तब वो जानते हैं कि हम आत्मा को....। अभी वहाँ आत्मा का ज्ञान है। यहाँ आत्मा का भी ज्ञान नहीं है। इसलिए बाप आत्मा का भी ज्ञान देते हैं कि तुम आत्माएँ हो और तुम्हारा बाप एक है और तुम्हारा यह जो शरीर है, जिसको ऑरगन्स (या) कर्मेन्द्रियाँ कहा जाता है, इनसे तुम कर्म करते हो। यह कर्मक्षेत्र है। इसमें सबको कर्म करना ही है। शांत नहीं रहना है। शांति का स्थान यह नहीं है, यह कर्म का स्थान है। कर्म बिगर कोई रह नहीं सकते हैं। कर्म का सन्यास कोई कर नहीं सकते हैं। समझा ना। कर्म का सन्यास कैसे करेंगे? कर्म का सन्यास तो मूलवतन में होता है; क्योंकि वहाँ अकेली आत्मा है। यहाँ किसका कर्म का सन्यास थोड़े ही होता है। यह भी झूठ बात है जो समझते हैं कर्म सन्यासी। कर्म का सन्यास हो ही नहीं सकता है। तुम शांत में अपने स्वधर्म में बैठ सकते हो, उसको कहा जाता है रियल शांत। यह नाक मूँद करके प्राणायाम करना, वो तो आर्टीफिशल हो गई। उसको झूठी कहा जाता है। जो प्राणायाम या खड्ढे में घुस जाते हैं, ये तो अभ्यास है। ये सब तो नहीं कर सकते हैं ना। उसमें माताएँ तो कर भी न सकें।...उनमें डिफीकल्टीज है। कोई–2 प्राणायाम चढ़ाते–2 बुद्धि खराब हो जाती है, माथा खराब हो जाता है। यह तो बिल्कुल ही सहज समझने की बात है कि हे मेरे लाडले बच्चे! तुम आत्माओं का स्वधर्म है ही शांत ; परन्तु जब तुम्हारे स्वधर्म शांत में हो तो घर में रहते हो। वहाँ शांत रहते हो। उसको कहा ही जाता है शांतिधाम। पीछे सतयुग को कहा जाता है सुखधाम। यानी बाप आ करके फिर नई दुनिया को स्थापन करते हैं। देखो, अभी नई दुनिया स्थापन हो रही है ना, पुरानी का तो खलास सामने खड़ा हुआ है। गाया भी जाता है कि प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा स्थापना। अभी सूक्ष्मवतन में जो ब्रह्मा रहते हैं, उन द्वारा तो मनुष्य–सृष्टि की स्थापना नहीं हो सकती है। तो वो है अव्यक्त ब्रह्मा, तो फिर ये है व्यक्त ब्रह्मा। यानी ये है पतित तो वो है पावन। जब पतित योग और ज्ञान से पावन बन जाते हैं तब फिर वो बन जाते हैं। वैसे तुम भी ऐसे ही हो। समझा। प्रजापिता ब्रह्मा जब यहाँ है तो तुम सूक्ष्मवतन में भी उनके साथ रह जाती हो। तुम जाते हो तो वहाँ...। उसको कहा ही जाता है फरिश्तों की दुनिया। सूक्ष्मवतन में फरिश्तों की दुनिया। वहाँ हड्डी–मांस नहीं होता है। वहाँ सूक्ष्म सफेद शरीर होते हैं। तुम लोगों ने घोस्ट नहीं देखा है ना। घोस्ट, जिसको भूत कहते हैं। जिसको शरीर फट से नहीं मिलता है, वो भटकते हैं। तो छाया रूपी उनका शरीर होता है। वो देखने में आता है, जैसे मनुष्य जाता है; पर छाया रूपी। उनको पकड़ो तो पकड़ने नहीं देते हैं। यहाँ तक भी आ जाते हैं। उसको दूसरे अक्षर में घोस्ट भी कहते हैं कि आत्मा (को) जब तलक शरीर मिले तब तलक ऐसे भटकती है। वो तो हुई दूसरी दुनिया, उनसे कोई ताल्लुक तो है नहीं। इस ज्ञानमार्ग में यह समझाया जाता है कि तुम(को) अपने बाप को याद करने से क्या होगा? तुम्हारे ऊपर जो विकर्म है वो जल जाएँगे। अभी टाइम तो बहुत थोड़ा हुआ है। तब गाया जाता है कि बहुत गई, थोड़ी रही, अब थोड़ी की भी थोड़ी समय रही है। इसलिए जितना हो सके इतना अपने बाप को याद करो। तो क्या होगा? अंत मते सो गत। तो देखो, वहाँ है भी ना, गीता में एक/दो राइट अक्षर लिखते तो हैं। बाबा ने कहा है ना कि शास्त्रों में जैसे आटे में लून, कोई सच्चे अक्षर हैं, बाकी सब झूठ। अभी उसमें कहते हैं। कौन कहते हैं? भगवानुवाच। अभी पहले तो भगवान कौन है उसका मालूम पड़ना चाहिए कि भगवान निराकार है। कैसे उवाच करते हैं? बोलता है मैं साधारण ब्रह्मा के तन में, जिसका नाम हम खुद प्रजापिता ब्रह्मा रखते हैं, उसके तन में प्रवेश

कर और फिर मैं क्या कहता हूँ? ज्ञान देते, योग सिखलाते यानी आत्माओं से बात करते हैं। बच्चे, अभी निरंतर मुझे याद करो। अभी यह दुनिया विनाश को पाने वाली है। मैं आता ही हूँ एक धर्म की स्थापना...जो प्रायःलोप है और फिर बाकी धर्मों का विनाश। बरोबर अभी तो बहुत धर्म हैं, अथाह धर्म हैं। इस समय में लाखों धर्म हैं। लाखों तो (क्या) करोड़ों धर्म होंगे। तो अनेक हो गए ना। सतयुग में भारत में आज से 5000 वर्ष पहले एक ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म था, और तो कोई था ही नहीं। समझाते हैं ना कि बच्चे, बरोबर जो भी आत्माएँ हैं वो अपना हिसाब–किताब चुक्तू करके...। इसको कहा ही जाता है कयामत का समय, सेग्रिगेशन(अलगाव) का समय, हिसाब चुक्तू होने का समय। सबका दुःख का हिसाब सब चुक्तू हो करके यानी पापों का....। दुःख मिलता है पाप के कारण। ये पापों का हिसाब चुक्तू हो और फिर पुण्य का हिसाब शुरू होता है। तो जो मनुष्य पहले वहाँ से आते हैं.... पाप आत्माएँ तो नहीं जा सकेंगी ना। उनको ज़रूर पुण्य आत्मा ...। तो देखो, आग में लग पड़ती है। हर एक चीज़ को शुद्ध करने के लिए आग जगाई जाती है। जब यज्ञ भी रचते हैं तो देखो आग जगाते हैं। उसमें काठी वगैरह देकर हवन आदि करते हैं; परन्तु बाबा बोलता है ये कोई मटेरियल यज्ञ तो नहीं है ना, हवन तो नहीं है। यह तो है रुद्र ज्ञान यज्ञ। इसको गाया ही ऐसा गया है कि 'रुद्र ज्ञान यज्ञ'। ऐसे कहते ही नहीं हैं कि कृष्ण ज्ञान यज्ञ। ऐसे है नहीं। कृष्ण ने कोई यज्ञ नहीं रचा है। कृष्ण तो सतयुग में प्रिन्स है, वहाँ काहे का यज्ञ! यज्ञ रचा जाता है जब ये आफतें होती हैं। तो देखो, इस समय में आफतें हैं ना। बहुत मनुष्य रुद्र यज्ञ भी रचते हैं; पर रुद्र ज्ञान यज्ञ नहीं रच सकते हैं। रुद्र ज्ञान यज्ञ तो रुद्र आकर रचेगा अर्थात् परमपिता परमात्मा आ करके रचते हैं ना। फिर कहते हैं कि यह जो रुद्र ज्ञान यज्ञ रचा हुआ है, इसमें जो भी यज्ञ हैं वो सभी आहुति हो जाएगी, जो भी मनुष्य हैं सब आहुति आ जाएगी; क्योंकि बहुत बड़ा यज्ञ है। ...बाबा आया हुआ है, यह यज्ञ रचा हुआ है। कितना बरस हो गया? इतना यज्ञ कोई थोड़े ही रच सकते हैं। यह यज्ञ रचता है जब तलक कि आदि सनातन देवी–देवता धर्म की बादशाही स्थापन हो जावे और वो पावन बन जाए। पावन कोई फट से तो नहीं बनते हैं। ये तो योग से बनना है। तो योग लगाते रहो–लगाते रहो, अंत तक लगाते रहो। ये है योग की रेस। कैसी रेस? कि हम रुद्र को यानी बाप को याद करते हैं। जो जितना जास्ती याद करेंगे, वो जैसे कि दौड़ी जास्ती पहनते हैं। दौड़ी जास्ती पहनते हैं तो जा करके उसके गले का हार बनेंगे। उसको कहा जाता है रुद्रमाला। फिर गले का हार बन करके आ करके विष्णु की माला बनते हैं। इसलिए दो मालाएँ मशहूर हैं। विष्णु के गले में फूल की माला ; क्योंकि उन काँटे से फूल बनते हो। रावण पुरी से विष्णुपुरी जाते हो तो विष्णु की माला बन जाते हो। पहले रुद्र की माला। पहले बाप के पास घर ज़रूर जाना है। बाप ले जाते हैं ना। पीछे जो–2 पुरुषार्थ करेंगे वो नर से नारायण बन और नारी से लक्ष्मी बन, पीछे जा करके राज्य करते हैं। विष्णु के दो रूप हो गए। तो गोया यह आदि सनातन देवी–देवता धर्म का स्वराज्य स्थापन हो रहा है। सतयुग में तो नहीं होगा। स्थापना तो यहाँ होगी ना। पतित तो यहाँ पावन बनेंगे। लायक यहाँ बनेंगे। तो देखो, तुमको राजयोग सिखलाय रहे हैं। कैसे? जैसे 5000 वर्ष पहले सिखलाया था। यह योग मैं हर 5000 वर्ष बाद, हर कल्प के बाद तुमको सिखलाते आता हूँ और तुमको यह पूरा निश्चय भी है कि बरोबर बाप आते हैं जब भारत बिल्कुल ही जड़जड़ीभूत अवस्था को पाता है, बिल्कुल ही कंगाल हो जाता है तो बाप आकर... है ना शिवरात्रि। आता तो है ना। फिर शिवजयन्ती भी कहते हैं, शिवरात्रि भी कहते हैं। कौन–सी रात्रि? रात्रि वो नहीं है जिस रात्रि में श्रीकृष्ण जन्म लेते हैं। वो वहाँ घड़ी देखते हैं, कलाएँ वगैरह देखते हैं। इसका कोई पता ही नहीं है; परन्तु रात किसको कहा जाता है? कलहयुग का अंत और सतयुग की आदि। यानी पुरानी दुनिया का अंत और नई दुनिया की आदि। बरोबर

सतयुग–त्रेता है दिन, फिर द्वापर–कलहयुग है रात। इसको कहा जाता है ब्रह्मा का बेहद का दिन, फिर ब्रह्मा की बेहद की रात। दिन और रात भी तो गाया हुआ है ना। किसका? ब्रह्मा का। कृष्ण का नहीं गाएँगे; क्योंकि कृष्ण को ज्ञान नहीं है। यहाँ ब्रह्मा को ज्ञान मिलता है। प्रजापिता ब्रह्मा को बाप से ज्ञान मिलता है और तुम बच्चों को फिर ब्रह्मा से मिलता है। गोया शिवबाबा तुमको ब्रह्मा द्वारा ज्ञान दे रहे हैं। कौन–सा? यह सारे सृष्टि के चक्र का। तुमको त्रिकालदर्शी बनाते हैं। मनुष्य–सृष्टि में कोई एक भी त्रिकालदर्शी हो नहीं सकते हैं, इम्पॉसिबुल है। अगर होवे तो यह नॉलेज देवे ना कि सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। कोई सतसंग में कभी भी कोई नॉलेज दे नहीं सकता है। यह बाप जब आते हैं तो मनुष्य तो जानते हैं कि श्रीकृष्ण भगवानुवाच। अभी भगवान तो सबका एक। कभी भी मुसलमान, पारसी वगैरह कोई श्रीकृष्ण को भगवान थोड़े ही मानेंगे। नहीं, वो ये जानते हैं कि बरोबर यह राजकुमार है। क्या कोई राजकुमार भगवान होता है? भगवान राजाई लेवे तो फिर राजाई गुमावे भी।....वो तो बाप कहते हैं कि तुमको राजधानी/विश्व का मालिक बनाय मैं फिर निर्वाणधाम में ही रहता हूँ यानी परमधाम में ही रहता हूँ। फिर सतयुग और त्रेता में कोई तकलीफ तो होती नहीं है, न कोई मुझे पुकारते हैं; इसलिए मैं निर्वाण में रहता हूँ। समझा ना। बस, मनुष्यों को कोई भी दुःख नहीं है। फिर जब दुःख(ी) होना शुरू करते हैं तो मेरा पार्ट भी शुरू हो जाता है। मैं सुना ही करता हूँ। मुझे बहुत पुकारते हैं, याद करते हैं– हे भगवान, हे रहमदिल! ऐसे शुरू कर देते हैं ; क्योंकि माया का राज्य शुरू हो जाता है और दुःख थोड़ा–2 शुरू हो जाता है। तो बाप ने अच्छी तरह से समझाया है। तब भक्ति कैसे शुरू होती है? पहले–2 जो पूज्य थे, जो पुजारी होते हैं, वो पहले अव्यभिचारी पूजा करते हैं यानी शिव की पूजा करते हैं। उसको कहा जाता है अव्यभिचारी पूजा। उसको ही कहा जाता है सतोप्रधान पूजा, भक्ति।....सतोप्रधान के पीछे सतो, पीछे शिव की पूजा छोड़ करके देवताओं की पूजा शुरू करते हैं। जानते नहीं हैं; क्योंकि पुजारी जान कैसे सके। कोई को भी नहीं जानते हैं, कोई भी नहीं जानते हैं। बस, पूजा शुरू हो जाती है। फिर शिव की पूजा, फिर दिन–प्रतिदिन वो शिव का बैठ करके नाम डालते हैं। नहीं तो एकदम पहले–2 नाम शिव का होता है ; क्योंकि शिव कहो या सोमनाथ कहो, बात एक ही है। शिवबाबा तो निराकार ठहरा। अच्छा, सोमनाथ नाम क्यों पड़ा? क्योंकि बच्चों को आ करके सोमरस पिलाया, ज्ञानामृत पिलाया ; इसलिए नाम पड़ गया 'सोमनाथ'। पीछे तो बहुत ही नाम पड़ गए हैं। शिवबाबा के ऊपर ढेर के ढेर नाम पड़े हैं। बॉम्बे में बबूलनाथ यानी बबूल जो काँटे थे, उनको फूल बनाने वाला। उसका अर्थ तो कोई समझते ही नहीं हैं। ऐसे बहुत ही नाम डालते हैं। सबमें अर्थ हैं कि क्यों इसका नाम ऐसे (हैं), एक का नाम क्यों रखा है।.... सर्व का सद्गति दाता एक है। उनके लिए अगर कह देते हैं कि सर्वव्यापी है, कुत्ते में, बिल्ले में। यह तो ग्लानि हुई ना। बाप कहते हैं जब संगम का समय आता है, मैं सिर्फ एक बार ही आता हूँ। मैं कोई इतने अवतार लेता ही नहीं हूँ– परशुराम अवतार, फलाना अवतार। ये सभी भक्ति के बनाए हुए हैं। ये सब जो भी हैं भक्ति के कर्मकाण्ड के किताब हैं या पुस्तक हैं या शास्त्र हैं। बाकी मुझे कोई भी नहीं जानते। न कि ऐसा है कि भक्ति करने से मुझे मिलते हैं। ऐसे भी नहीं है। जब सब भक्ति का समय पूरा होता है, रावण राज्य पूरा होता है। रावण राज्य शुरू होता है और भक्ति शुरू होती है। जब यह आधाकल्प पूरा होता है तब फिर मैं आता हूँ। यह ड्रामा में एक नियम है। ऐसे नहीं है कि कभी मुझे कोई बहुत याद करे। अरे! यहाँ बहुत ही लड़ाइयाँ लगी हुई हैं। अंग्रेजों की लड़ाई, मुसलमानों की लड़ाई, पुकारा तो बहुत। मैं कभी आया हुआ हूँ क्या? नहीं, मैं कभी नहीं आता हूँ। मैं आता हूँ एक बार। बाप एक तो अवतार भी एक। आता भी एक दफा हूँ, बस। कहते हैं ना– पतितों को पावन करने वाले लिए आओ। अच्छा, फिर हमको भला कब बुलाएँगे, जो मैं आऊँ? क्या द्वापर में आऊँगा? नहीं, द्वापर

के पीछे तो कलहयुग है। मुझे ज़रूर कलहयुग के अंत और सतयुग के आदि में आना पड़ता है। मेरा एक ही बार आना होता है और आ करके फिर सबको पूरा योगी बनाता हूँ। सो भी कौन–से योगी? राजयोगी। तुम हो राजयोगी और वो जो सन्यास है वो है हठयोग। तो हठयोगी राजयोग नहीं सिखला सकते हैं। बाबा राजयोग....फिर हठयोग थोड़े ही सिखलाएँगे। उनका सिखलाना किस(को) है? पुरुषों को। फिमेल को थोड़े ही जंगल में जाना है। वो भी जैसे भारत का एक धर्म है, भारत को थमाने के लिए; क्योंकि भारत में पवित्रता चाहिए ना। भारत जैसा पवित्र और कोई बनता ही नहीं है। 100 परसेन्ट पवित्र और फिर 100 परसेन्ट पतित। गाते भी यहाँ हैं ना– पतित–पावन आओ ! पावन कैसे बनाओ? ये देवताओं के जैसा बनाओ। देवता बनाओ। ऐसे ही कहेंगे, और तो कोई नहीं कहेंगे ना। सन्यासी कहेंगे कि हे पतित–पावन आओ, हमको पावन दुनिया....? वो है पावन आत्माओं की दुनिया और सतयुग है पावन जीव आत्माओं की दुनिया। वो तो उनको पुकारते हैं कि बाबा, हम पतित को, गृहस्थ धर्म है ना, हमको पावन गृहस्थ धर्म बनाओ; क्योंकि भारत में पावन गृहस्थ धर्म था। अभी गृहस्थ धर्म पतित है। पतित गृहस्थ धर्म को पावन गृहस्थ धर्म कोई गृहस्थ का सन्यास करने वाले थोड़े ही बना सकेंगे। उनका फिर क्या है? बाप बताते हैं कि वो पवित्र रहते हैं; इसलिए भारत थमा रहता है और सच भी बोलते थे (कि) नेती–2, हम न रचता को जानते हैं, न रचना को जानते हैं। वो तो बेअंत है। अभी जब तमोप्रधान बने हैं तो कह देते हैं शिवोऽहम्, सभी ईश्वर के रूप हैं। समझा ना। पहले ऐसे नहीं था ; क्योंकि उस समय में सतोप्रधान अवस्था में थे, फिर सतो में, रजो में, अभी सारी दुनिया बिल्कुल ही तमोप्रधान अवस्था में हैं। तब बाप कहते हैं मैं आता हूँ, 100 परसेन्ट तमोप्रधान वालों को 100 परसेन्ट सतोप्रधान बनाता हूँ। पीछे सबको तो सतयुग में नहीं ले आता हूँ ना ; क्योंकि सब तो सतयुग में होते ही नहीं हैं। सतयुग में आदि सनातन देवी–देवता धर्म होता है....पीछे आते हैं सभी। सभी तो स्वर्ग में नहीं जाएँगे। बाकी जो आते हैं उनको मुक्ति .....। मुक्ति और जीवनमुक्ति दाता ही एक, और न कोई। मनुष्य, मनुष्य को कभी भी मुक्ति–जीवनमुक्ति नहीं दे सकते हैं; इसलिए गुरू कहलाने के हकदार नहीं हैं। तो ये गुरू किसके हैं? ये हैं भक्तिमार्ग के गुरू। ये हैं ज्ञानमार्ग के गुरू, वो हैं भक्तिमार्ग के गुरू। तुम होयात्राओं के ऊपर भी गृहस्थ धर्म वालों का धंधा है। भक्ति करना कोई सन्यासी का कर्म नहीं है। वो भक्ति छोड़ देते हैं, गृहस्थ धर्म को ही छोड़ देते हैं। भक्ति है ही गृहस्थ आश्रम वालों को, न कि सन्यासियों के लिए; परन्तु पहले जंगल में रहते थे, फिर जब तमोप्रधान या रजो बनते हैं तो अंदर घुस आते हैं। पीछे ये जिस्मानी जैसे पण्डित तैसे ये पंडित भी बन जाते हैं। ये यात्रू भी बन जाते हैं। यात्रुओं की जगह...गुरू भी बन जाते हैं। फिर जैसे अंदर घुस जाते हैं। मुख से कहते हैं कि हम घरबार छोड़ने वाले हैं, सब कुछ छोड़ते हैं। उनको एक पैसा भी नहीं ले जाते हैं। कायदा ऐसा है– सन्यासी एक पैसा नहीं ले जावे, चले जावे गुरू के पास। अभी देखो, तमोप्रधान बनने के कारण आजकल कितने लखपति–करोड़पति ज्ञानमार्ग के, जो ज्ञान सागर बाबा है, उनके बच्चे। तुम रूहानी यात्रा कराएँगे और वो जो साधु,संत,सन्यासी हैं, वो सभी जिस्मानी यात्रा...। देखो, जाते हैं ना। नहीं तो जिस्मानी हैं ! सन्यासी करोड़पति हैं, उनके पास दस–2, बीस–2 करोड़ हैं। जब कहते हैं हमने हर्थ एण्ड होम यानी घरबार छोड़ा तो पीछे उनको पैसे की क्या दरकार है! तमोप्रधान बन जाने से पीछे ये घुस जाते हैं, पीछे लखपति–करोड़पति हो जाते हैं। गृहस्थियों से भी ये साहूकार हो जाते हैं, जो फिर मुख से कहते हैं कि हमने घरबार छोड़ा हुआ है। तो ये एडल्ट्रेशन, करप्शन हुई ना। धोखा हुआ ना। करप्शन को धोखा.....। अभी सर्वव्यापी कहना, यह भी तो धोखा हुआ ना। तब बाप आकर कहते हैं बच्ची, ये जो गुरू लोग हैं इन सबको छोड़ो। गीता में तो लिख दिया है कि इनको मारो। मारने की तो कोई बात है नहीं; क्योंकि तुम नॉन वायोलेन्स हो। तुम अहिंसक हो, हिंसक नहीं हो। न कोई से

लड़ते हो, न कोई के ऊपर काम–कटारी चलाते हो। तो देखो, इस काम पर जीत पहनना मेहनत है ना। सन्यासी घर बैठे नहीं जीत सकते हैं; इसलिए भाग जाते हैं और तुमको तो घर में बैठ करके भी, रह करके भी विकार को जीतना है। युक्ति? युक्ति यही होती है कि तुम ब्रह्माकुमार और कुमारी बन जाने से शिवबाबा से वर्सा लेते हो; इसलिए तुम भाई–बहन हो गए। यूँ वास्तव में हिसाब करें कि जब हम सभी भगवान के बच्चे हैं। निराकार पीछे साकार ब्रह्मा द्वारा, तो भाई–बहन ठहरे ना। वास्तव में तो सभी भाई–बहन ठहरे। पीछे ये बिरादरियाँ निकलती हैं; परन्तु वास्तव में हिसाब करें कि जब हम सब भगवान के बच्चे हैं तो ज़रूर हमको निर्विकारी बनना चाहिए। भाई–2 हुए। ब्रह्मा के द्वारा फिर भाई–बहन होते हैं। जब ब्रह्माकुमारी और कुमार बहन–भाई हों, तो विकार में जा नहीं सकते हो। अच्छा, विकार में न जाने से तुमको इसके लिए क्या मिलता है? अरे, विश्व की बादशाही मिलती है, सिर्फ एक अंतिम जन्म निर्विकारी रहने से। इसको कहा जाता है बहुत जन्म के अंत के जन्म का भी अंत। इसमें अगर गृहस्थ धर्म में रहते हुए कमल फूल के समान तुम निर्विकारी रहे, पवित्र रहे तो देखो कितना ऊँच पद मिलता है। तो स्टेटस हुई ना। एम–ऑब्जेक्ट है ना...यहाँ आए हुए हैं फिर देवी–देवता बनने। यहाँ तो सभी भ्रष्टाचार है। देवी–देवता कौन बनाएँगे? विश्व का मालिक कौन बनाएँगे? तो जो विश्व का रचता है, वो बनाएँगे ना।...ये सभी समझ की बात है। अभी तुम सभी समझदार बनते हो। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है यह सब तुम्हारे में ज्ञान है। इसलिए तुम स्वदर्शन चक्रधारी हो गए। स्व आत्मा को दर्शन हुआ, नॉलेज मिली कि ये सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। किससे नॉलेज मिली? परमपिता परमात्मा, जिसको ही नॉलेजफुल कहा जाता है; क्योंकि मनुष्य–सृष्टि का बीज–रूप है। तो जो बीज है वो चैतन्य है और उनको ही कह देते हैं– ज्ञान का सागर, नॉलेजफुल। तो उनको ज़रूर आना पड़े ना। तो देखो, अभी आए हैं, नॉलेज देते हैं। समझाते हैं– मैं हूँ मनुष्य–सृष्टि का बीज–रूप। बाकी तो अनेक बीज हैं। यह भी तुम जानते हो कि बीज से झाड़ कैसे होता है। यह भी उल्टा वृक्ष है। इसको उल्टा वृक्ष कहा जाता है। बीज ऊपर और झाड़ नीचे। समझा ना ! हम आत्माएँ तो ऊपर रहने वाली हैं ना और यहाँ झाड़ में आए हुए हैं। देखो, पहले–2 दैवी झाड़, पीछे इस्लामी झाड़, फिर बौद्धी झाड़, क्रिश्चियन झाड़, फिर उनमें मल्टीप्लीकेशन टार–डार–डारियाँ। अभी तुमको इस कल्प वृक्ष का अच्छी तरह से ज्ञान मिला है। यह दूसरा तो कोई दे नहीं सके, न कोई शास्त्र में है। शास्त्रों में क्यों नहीं है? तुम अभी जो सुनती हो, सो तो तुम्हारी बुद्धि में रहा, भले तुम कुछ लिखती भी हो; पर ये तो सब विनाश हो जाएगा ना। सतयुग में तो कोई शास्त्र वगैरह बिल्कुल होते ही नहीं हैं। मंदिर आदि तो होते ही नहीं हैं। कुछ भी नहीं होते हैं। ये सभी है भक्तिमार्ग की सामग्री। ये पीछे निकलती है। सतयुग में है नहीं। सतयुग में तो हीरे और जवाहरों के महल, वो राजभाग, तुम जो इनहेरीटेन्स(वर्सा) पाती हो, वो तुम भोगती हो। तो भी कितनी अच्छी कहानी है। तुम कह सकते हो ना– लांग–2 एगो एक कहानी। 5000 वर्ष पहले यहाँ आदि सनातन देवी–देवता धर्म था। ये लक्ष्मी–नारायण का राज्य था। पीछे जब त्रेता आया तो श्री सीता और राम का राज्य चला। देखो, लांग–2 एगो की आखानी, ये तो समझ सकते हो ना। सूर्यवंशियों के बाद चंद्रवंशी, जब उन चंद्रवंशियों का भी आधाकल्प पूरा हुआ तब फिर माया की प्रवेशता हो गई। पीछे दूसरे धर्म आने लगे। मुख्य इस्लामी धर्म आया, पीछे बौद्धी, फिर क्रिश्चियन और फिर वगैरह–3 यानी झाड़ को छोटी–2 टार–डार–डारियाँ निकलीं, झाड़ पूरा हो गया। देखो, लांग–2 ऐगो तुम अखानी सुनाती हो ना, बिल्कुल सहज है। अभी झाड़ तमोप्रधान हो गया। अब फिर से रिपीट करेगा। अब यह कितना सहज ज्ञान है। अच्छा, बाबा अभी विदाई लेते हैं। मंसा,वाचा,कर्मणा कोई को दुःख न देना है। उसको अंग्रेजी में कहते हैं– थॉट, वर्ड और डीड किसको भी दुःख नहीं देना है। अभी समझाना तो है ना। किसको कहना

नहीं है कि गीता का भगवान कृष्ण नहीं है, भगवान है। कृष्ण तो पुनर्जन्म लेते हैं, मनुष्य है। तो वो गुस्सा खाते हैं। अच्छा, देखते हैं कि उनको गुस्सा लगता है तो उनको नहीं बताना चाहिए, छोड़ देना चाहिए। अच्छा भई, तुमको गुस्सा लगता है ना। अभी अपने ही जिस मत पर हो, उस पर कायम रहो, फिर छोड़ देना। बस, ये एक ही बात पर है सब। तुम बहुत तिक–2 करते हो ना, तभी मनुष्य मूँझ जाते हैं। तुम्हारी बात ही एक है, जिसने भारत को कंगाल बनाया है। ये एक बात है। बाप को कुत्ते में, बिल्ले में, गालियाँ पिछाड़ी गाली। बहुत डिफेमेशन किसकी हुई है? गॉडफादर की। वो आकर कहते हैं तब तुम मेरी और मेरे देवताओं की ग्लानि करते हो। कैसे ग्लानि करते हो? मेरे को सर्वव्यापी कुत्ते में, बिल्ले में, कच्छ में, मच्छ में लगा दिया। कहते हो (कि) पुनर्जन्म नहीं लेते हैं (और) दूसरी तरफ कहते हो कच्छ–मच्छ में, भित्तर में, ठिक्कर में, कण–2 में।....देखो समझाते हैं ना। बड़ी गाली दिया ना।.....पीछे सेकेण्ड नंबर में कह देते हो शंकर पार्वती के ऊपर पिछाड़ी.... क्योंकि पहले नंबर में है शिवबाबा, पीछे नंबर में है...शंकर। शंकर के ऊपर भी तुमने....वो धतूरा खाते हैं, भांग पीते हैं, वो पार्वती के ऊपर पिछाड़ी हुआ, पीछे बिच्छू और टिण्डन पैदा हो गए। ये बातें हैं या नॉनसेन्स हैं? सेकेण्ड नंबर में उनकी ग्लानि, फिर थर्ड नंबर में आओ, ब्रह्मा की। ब्रह्मा सरस्वती के ऊपर फिदा हुआ, फलाना हुआ....। अच्छा, आओ विष्णु के ऊपर। विष्णु के दो रूप हैं लक्ष्मी–नारायण, छोटेपन में है कृष्ण। कृष्ण को भी तो तुमने गाली दे दी। कृष्ण को 108 रानियाँ थीं। 16000 रानियाँ थीं। देखो, उनको भी गाली दी....। जज करो कि बरोबर ऐसे है? तो सबको हुआ। शिव को भी हुआ, जो रचता है, फिर उनके सेकेण्ड में आओ– शंकर। उनको भी शिव शंकर से मिला दिया, बैल के ऊपर बैठा दिया। अरे, सूक्ष्मवतन में बैल कहाँ से आया? तो मूर्खता हुई ना। अभी सभी मूर्ख। फिर उसकी भी बता दी कि ब्रह्मा की भी करते हैं। फिदा हुए, फलाना। अच्छा, फिर आओ विष्णु के ऊपर। ऊँचे ते ऊँच ये तीन हैं ना। विष्णु के भी दो रूप लक्ष्मी और नारायण। यह भी उनको पता तो है नहीं; परन्तु नहीं, लक्ष्मी और नारायण तो(से) पहले है कृष्ण और राधे। उसमें राधे को इतनी गाली नहीं दी, कृष्ण को ठोक करके गाली दी कि इसको सर्प ने डसा, 108 रानी थी। अब 108 रानी थी और भगाते थे और सर्प ने डसा, वो ज्ञान कैसे देंगे? उसको पतित–पावन कैसे कहेंगे? जिसको 108 स्त्री, उसको पतित–पावन कैसे कहेंगे? तो देखो, कितनी भूल है! अब जब बताते हैं तो मनुष्यों को मिर्ची लगती है। सच बताओ तो मुट्ठों को लाल मिर्ची लगती है। अभी क्या करे भगवन! अच्छा बच्ची, टोली ले आओ।

मीठे–2, सिकीलधे बच्चों प्रति। मात–पिता हम बालक तेरे, तुम्हारी कृपा ते सुख घनेरे– गाया तो जाता है ना। लौकिक माँ–बाप की तो ये महिमा नहीं है। ज़रूर परलौकिक माँ–बाप की है। मात–पिता भी ज़रूर होने चाहिए; क्योंकि भगवान रचता है, माता भी ज़रूर होगी। तो देखो कहते हैं ना– तुम मात–पिता हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे मिलते हैं। अभी कब मिलते हैं, बिचारे गाते आते हैं, उन लोगों को पता नहीं है। शास्त्रों में तो कल्प की आयु लाखों वर्ष लगा दी। घोर अंधियारे में...। अभी तुम जानते हो कि बरोबर तुम मात–पिता, हम बालक तुम्हारे से राजयोग सीख करके स्वर्ग के सदा सुख का वर्सा ले रहे हैं। समझा ना। सन्यासी सुख को कागविष्ठा समान समझते हैं। अभी जो कागविष्ठा समान सुख है उसमें से वो राज़ को कैसे जानेंगे, राज्य कैसे करेंगे? तो जो तुम राजा थे, सो फिर याद करते हैं– तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे फिर से मिलेंगे। वो भी समझते नहीं हैं, बाकी कहते रहते हैं– तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे। अब तुम जानते हो हमारी यह जो पुकार थी वो अभी पूरी हो रही है। बाप आ करके हमको फिर राजयोग सिखला रहे हैं। अच्छा! मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग।